श्रीनिवास बालभारती – 106

यशोदा

यशोदा

तेलुगु मूल

डा. आर. अनंतपद्मनाभ राव

अनुवाद

डा. पुट्टपर्ति नागपद्मिनी

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति

2013

Srinivasa Bala Bharati - 106
(Children Series)

YASHODA

Telugu Version
Dr. R. Anantha Padmanabha Rao

Translator
Dr. Puttaparthy Nagapadmini

Editor-in-Chief
Prof. Ravva Sri Hari

T.T.D. Religious Publications Series No.961
©All Rights Reserved

First Edition - 2013

Copies:

Price :

Published by
L.V. Subrahmanyam, I.A.S.,
Executive Officer
Tirumala Tirupati Devasthanams
Tirupati.

Printed at
Tirumala Tirupati Devasthanams Press
Tirupati.

हमारी बात

पौधा कितना भी सुंदर हो, आवश्यक पोषण एंव श्रद्धा से ही सुगंधिल फूलों को दे सकता है। अगर इसमें कमी हो तो पौधे में भी वे कमियाँ अवश्य दिखाई देती हैं। टेढे मेढ़े पौधों को देखकर इसीलिए कहा जाता है कि पौधों की दशा में ही श्रद्धा और पोषण की जरुरत है। पौधे हों या बच्चे, बचपन से ही श्रद्धासक्तियों से पोषण करें तो, वे समाज रुपी नंदनवन की सुंदरता को बढ़ायेंगे। सद्व्यवहार रुपी सौरभों से जाति की प्रतिष्ठा को दुगना करेंगे।

आज के बालक की कल के जिम्मेदार नागरिक हैं। उन्हें, हमारी संस्कृति को प्रतिबिंबित करने वाले महान हस्तियों की जीवनियों और उनसे संबंधित घटनाओं को बताते जायें, तो उन सब का प्रभाव अवश्य उन बालकों के चरित्र पर होगा। उन महान हस्तियों के आदर्श ही बच्चों के पथ प्रदर्शक होंगे। जीवन गमन में अनेकानेक परिस्थितियों से निपटने का धैर्य भी उन्हें मिल जायेगा। इसी उद्देश्य से छोटे छोटे बच्चों के लिए ही तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् ने इस ''श्रीनिवास बाल-भारती'' को आपके सामने रखा है। कुछ महाशयों ने हमें लिखा है यह प्रणाली मात्र बच्चों के लिए ही नही बडो के लिए भी लाभदायक सिद्ध हो रहा है। हमें खुशी है कि हरेक परिवार के बडे और बच्चे भी इन पुस्तिकाओं को आदरपूर्वक पढ़ रहे है। आशा है मानवता के मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए उपक्रमित इस 'श्रीनि वास बाल-भारती' का सही उपयोग किया जायेगा।

इस प्रणाली की परिकल्पना से लेकर संपादन का भी कार्यभार का निर्वाह करने के लिए आचार्य एस.बी. रघुनाथाचार्य महाशय के प्रति हम आभारी है जो केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के उप कुलपति, तथा टी टी डी प्रकाशन विभाग के समन्वयकर्ता भी रहे हैं, इनके संपादन में अब तक सत्तर पुस्तिकायें प्रकाशित हैं। इस प्रणाली के अंतर्गत काम करनेवाले सभी रचनाकार कलाकार एंव सहायको को हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

वैकुण्ठ एकादशी
20.12.1996

कार्यकारी अधिकारी
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति

प्राक्कथन

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। अगर वे बचपन में ही महोन्नत सज्जनों की जीवनियों के बारे में जानकारी लें, तो अपने भावी जीवन को उदात्त धरातल पर उज्ज्वल रूप से जीने के मौके को प्राप्त कर सकते हैं। उन महोन्नत सज्जनों के जीवन में घटित अनुभवों से हमारी भारतीय संस्कृति, जीवन में आचरणीय मूल धार्मिक सिद्धान्तों तथा नैतिक मूल्यों आदि को वे निश्चय ही सीख सकते हैं। आज की पाठशालाओं में इन विषयों को सिखाने की संभावना नहीं है।

उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर तिरुमल तिरुपति देवस्थान के प्रचुरण विभाग ने डॉ.एस.वी.रघुनाथाचार्य के संपादन में स्थापित ''बाल भारती सीरीस'' के अन्तर्गत विविध लेखकों के द्वारा तेलुगु में रचित ऋषि-मुनियों व महोन्नत सज्जनों की जीवनियों से संबंधित लगभग १०० पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया। इनका पाठकों ने समादर किया और इसी प्रोत्साहन से प्रेरित होकर अन्य भाषाओं में भी इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया। प्रारम्भिक तौर पर इनको अंग्रेजी व हिन्दी भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है। इनके द्वारा बच्चे व जिज्ञासु पाठकों को अवश्य ही लाभ पहुँचेगा।

इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का उद्धेश्य यही है कि बच्चे पढें और बडे लोग इनका अध्ययन कर, कहानियों के रूप में इनका वर्णन करें, तद्वारा बच्चों में सृजनात्मक शक्ति को बढा दें। फल स्वरूप बच्चों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा निश्चय ही बचपन में ही मिलेगी।

आर. श्रीहरि
एडिटर-इन-चीफ
ति.ति.देवस्थानम्

स्वागतम्

श्रीनिवास दयोद्भूता बालानां स्फूर्तिदायिनी।
भारती जयताल्लोके भारतीय गुणोज्ज्वला।।

खंड खंडांतरों में जब सभ्यता, आँखें खोल रही थी, तब तक हमारा भारत, सभ्यता नौतिकता, संप्रदाय तथा धार्मिकता आदि में कीर्तिमान था। इस धरा पर जनम लिया हर एक मानव, अधर्म का सामना कर, धर्माचरण में अपने जीवन को सुसंपन्न कर, माधव बनने की दिशा में कदम बढानेवाला महानुभाव ही रहा। वैसी महान विभूतियों का सामीप्य ही हमारे सुख शांतियों का रहस्य है। यहाँ की हर लडकी या लडका, पहले सोचते हैं कि 'मैं भारतीय हूँ, यह सदियों से आ रहा मेरा संप्रदाय है, इसकी रक्षा मेरा कर्त्तव्य है।' इन्हीं भावनाओं के साथ वे सब देश की सेवा में तल्लीन हो जाते हैं।

सच कहा जाय तो, हमारा देश कई महापुरुष, महानुभाव, पतिव्रताएँ तथा महावीरों की जन्म भूमि है। इन सबकी जीवनियाँ ही हमारी संस्कृति की आधारशिलायें हैं। स्वच्छ जीवन वाहिनियों के स्रोत हैं। वे तो सच में महान भागवान हैं। हमारे पीछे अत्यंत उत्कृष्ठ इतिहास है। अगर उन महानुभावों का जन्म स्थान यह देश नहीं हुआ होता तो यह महान संस्कृति और सभ्यता हमे मिलती ही नही। उन सबो को समझना, उनके बारे में पढ़ना, तथा उनके आदर्शों का स्मरण करना ये सब ज्ञान बढाने के मार्ग हैं यही अभ्यास, हमारी भारत जाति के जीवन प्रवाह में सदियों तक न मिटने वाले सौरभों को व्याप्त करेगा। इसी उद्देश्य से श्रीनिवास बाल भारती की परिकल्पना हुई है। कितने ही महापुरुषों की जीवनियों को, यह आपके सामने रखेगी, अब फिर यह देरी किस बात की? आइये!

आप सब को हमारा हार्दिक स्वागत!

विजय दशमी
21.10.1996

एस.बी.रघुनाथाचार्य
प्रधान संपादक

आमुख

वह हँसमुख कितना सुंदर है? उन आँखों की कांतियाँ देखनेवालों में उत्सुकता बढा रहीं हैं। बालक होते हुए भी तीनों लोकों को आकर्षित करनेवाला वह तेज, देखने लायक है। अरे उसके पीछे पीछे भाग रही वह स्त्री कौन है? उस बालक को पकड लेने के लिए वह तो लाखों कोशिशें कर रही है। वह नटखट बालक तो लगता है हाथ लग ही गया लेकिन इतने ही में फिसलकर भाग जा रहा है। उस स्त्री के मुँह में, बालक को पकड ही लेने की दीक्षा, उस के नटखट स्वभाव के प्रति चिडचिडाहट, उसकी बाल-क्रीडाओं के प्रति आनंद, ये सब भाव सुस्पष्ट हैं। उसके मुखमंडल पर श्वेद बिंदु-मोतियों की मालाओं की तरह चमक रहे हैं। आखिर यह बालक कौन है? और कौन हो सकता है? तीनों लोकों को ही नहीं, अपनी माँ को भी न मिलनेवाली-सुंदरता का सागर है। वह है कृष्ण-कन्हैया! तो फिर उसे पकडने के लिए उसके पीछे भागनेवाली वह स्त्री कौन है? कितने ही मन्नतों के फल स्वरूप उस मुकुंद को पाल-पोसकर बडा बनाने का भाग्य अपनायी हुई यशस्विनी-यशोदा!

भले ही देवकी ने इस बालक को जन्म दिया है, लेकिन कन्हैया ने अपनी क्रीडाओं का भरपूर आनंद उठाने का भाग्य माता यशोदा को ही दिया। इस तरह अपने जन्म को चरितार्थ करने का अवसर जो यशोदा को मिला, वह किसी और को अनायास मिलनेवाला नही है। यशोदा कृष्ण की माँ बनी। ''देखो कन्हैया! तू तो बडा बदमाश हो गया है।'' कहती हुई कृष्ण को डाँटती है। उन बातों से रुठ गये कृष्ण को फिर से चूमकर, उसकी सुंदरता को एकटक देखती रह

जाती है। यह भाग्य-मात्र यशोदा को छोडकर किसे मिलेगा? ''अरे मेरे लाल! माटी क्यों खाया है तूने? कहती हुई डाँटकर, कृष्ण के खोले हुए मुँह में ब्रह्माण्ड को देखकर आश्चर्य चकित उस माँ की वात्सल्य भक्ति ही हमारा आदर्श होना चाहिए।

कृष्ण कन्हैया को पाल-पोसने के लिए उस माँ ने जिस वत्सलता का सहारा लिया, वही वत्सलता उस भगवान की सेवा में खो जाने का राज मार्ग है।

तो फिर पढ़िये!

आचार्य एस.बी.रघुनाथाचार्य

यशोदा

यशोदा का जन्म धन्य है जिसने कृष्ण कन्हैया को लाड प्यार से पालने पोसने का महद् भाग्य पाया। नटखट कन्हैया जब गोप कांताओं को खूब सताता था, उस दृश्य को देखकर खुश होनेवाली मातृमूर्ती यशोदा है। बालकृष्ण की असीमित बाल्य क्रीडाओं से तंग आकर उसे काबू मे रखने की कोशिश कर विफल हुई माँ यशोदा पुण्यों की राशि है।

धन्य जीवन

वसुओं में 'द्रोण' प्रमुख है तथा उसकी पत्नी है धरा। ब्रह्म देवता ने उन्हें आज्ञा दी कि वे दोनों भूलोक में जन्म लें। लेकिन उन दोनों को भूलोक मे जन्म लेना तो अच्छा नहीं लगा। लेकिन क्या करें? यह ब्रह्मा जी की आज्ञा थी। द्रोण ने कहा- ''भगवान विष्णु का सेवा भाग्य अगर हमें प्रदान करेंगे तो ही हम भूलोक पर जन्म लेंगे।''। पितामह ने इस नियम को मान लिया। फलतः द्रोण और धरा दंपति, नंद और यशोदा के रुप में भूलोक पर आ गये। उन दोनों की इच्छा की पूर्ति करने के लिए ही बालकृष्ण उनके पास पले। उन दोनों को माँ-बाप का गौरव दिया। उन दोनो ने भी बालकृष्ण की बडे लाड-प्यार तथा भक्ति से सेवा की और इसी से उन दोनों का उद्धार भी हुआ।

प्रसूता यशोदा के पास

गोकुल में नंद-यशोदा दोनों निवास कर रहे थे। उनकी चिंता थी कि उनकी अपनी संतति नहीं हुई। बूढ़े भी होते जा रहे थे। कई

देवी देवताओं की सेवा करने पर भी कोई लाभ नही हुआ। निराश न होते हुए उन दोनों ने अपनी भक्ति और उपासना को निभाया। आखिर यशोदा गर्भवती हो गयी। वहाँ मथुरा में देवकी और वसुदेव दंपति के पुण्यों के फल-स्वरूप कृष्ण का जन्म हुआ और उसी समय यहाँ गोकुल में भी यशोदा को एक लडकी पैदा हुई। कंस के भय से नंद ने अपने बेटे को लाकर यशोदा के पास रख दिया और उसकी बेटी को आप ले जाकर कंस राजा को सौंप दिया। योगमाया के प्रभाव से नंद के इस काम को किसी ने नहीं पहचाना। गोकुल के लोगों ने सोचा कि यशोदा को बेटा हुआ है। यशोदा अपने बेटे को देखकर खुश हो गयी जो किलकारियाँ करता हुआ उसकी तरफ देख रहा है। जच्चे-बच्चे के सभी मंगल कार्यक्रम नंद के घर में संपन्न हुए।

हमारा बेटा सकुशल है न?

बेटे के जन्म से खुश नंद ने सभी मंगल कार्यों को बडी भक्ति तथा श्रद्धा से कर दिया। दो लाख गायों को दान में दे दिया। गोकुल मंगल वाद्यों से गूँज उठा ''हमारी यशोदा ने छोटे बच्चे को जन्म दिया है। चलो। हम सब देख आयें।'' कहती हुईं सारी गोप कांताएँ झुँडों में, नंद के घर आने लगीं। बच्चे को नहा कर दूध पिलाकर, सुलाने के लिए लोरियाँ गाने में ही उनका समय बीतता गया। क्रमशः कृष्ण भी यशोदा के लाड-प्यार में बडा हो रहा है।

एक बार नंद मथुरा गया। हर साल की तरह इस साल का कर भी कंस को चुका दिया। वहाँ वसुदेव ने नंद से पूछा कि 'हमारा

कुमार कैसा है?' नंद को कुछ भी समझ में नहीं आया। वापस गोकुल आ पहुँचा।

पूतना का अंत

कंस की आज्ञा से पूतना, एक सुंदरी के रूप में गोकुल में आ गयी। एक दिन जब यशोदा और रोहिणी कृष्ण की बाल लीलाओं को देखने में मग्न थे तब पूतना वहाँ पर आ पहुँची। बच्चे को दूध पिलाने लगी। यशोदा और रोहिणी के लाख मना करने पर भी उनकी एक न सुनी और बाल कृष्ण को गोद में छिपाकर, सीने से लगा ली। कन्हैया ने उसका स्तन मुँह में रखकर उसकी सारी शक्ति को पी डालना शुरु किया। पूतना घबराकर चिल्लाने लगी कि छोडो छोडो। लेकिन कृष्ण ने छोडा ही नहीं। आखिर पूतना को आखिरी साँस लेनी ही पडी। उसका पन्द्रह कोस तक का लम्बा चौडा शरीर गोकुल की गलियों मे गिरा। उसे देखकर गोपकांताएँ अचंभे में पड गयीं। बाल कृष्ण की दीठ उतारकर उसके हाथों में रक्षा-जंतर उन्होंने बाँधा। घबरा गयी यशोदा अपने बच्चे को झूले में डालकर सुलाने लगी। नंद ने अपने ग्राम वासियों के साथ, पूतना की विशाल काया को टुकडे टुकडे कर दहन कर डाला। लेकिन उस शरीर से बदबू नहीं कस्तूरी परिमल जैसी खुशबू निकली। शिशु का आहार दूध (भले ही विषयुक्त हो) पिलाने मात्र से पूतना को स्वर्ग लोक प्राप्ति हो गयी है। तो फिर कन्हैया को हर दिन सीने से लगाकर दूध पिलानेवाली यशोदा के भाग्य को क्या कहें?

बालकृष्ण तिरछा गिरने की कला सीख गया है। उस शुभवेला में यशोदा नंद ने बालक के जन्म नक्षत्र में उत्सव आयोजित किये। वेद

मेंत्रो से अभिषेचन आदि करने के बाद वस्त्रदान भी किया। बालक को सभी बंधु जनों के आशीर्वाद मिले। यशोदा बालक को सुलाकर घर आये हुए अतिथियों के आतिथ्यसत्कार में आनंद पूर्वक डूब गयी।

शकट छिन्न भिन्न हो गया!

बालकृष्ण कुछ ही देर बाद नींद से जाग गया। जम्हाई ली। पैर झटपटाये। सामने रखी एक शकट को अपने पैरों से झट से मारा। वह सीधे जाकर आसमान को छूकर नीचे गिर चकना-चूर हो गयी। आस पास खडे हुए वृन्दावन वासी सभी अचंभे में पड गये। आखिर यह शकट ऊपर कैसे गया? यही है सभी का संदेह। कुछ लोगों ने कहा यह तो बाल कृष्ण की बाल्य चेष्टा ही है। यशोदा हाँफती हुई आ गई। उसका अनुमान था कि बेटा भूख के मारे नींद से उठ गया और हाथ पैर मार रहा है। सीने से लगाकर दूध पिलाकर ही उसने चैन की साँस ली। बालक को बाल-ग्रह दोष न लगने के लिए बली चढ़ायी गयी। होम-कार्य किये गये। पुण्याहवाचन भी करवाये। इस तरह गाडी के रूप में आये हुए राक्षस का वध बालकृष्ण के हाथों हो गया।

कहाँ से आया है यह चक्रवात?

कन्हैया यशोदा की गोद में बैठकर दूध पी रहा है। अचानक बालक का शरीर पहाड की तरह भारी होने लगा। यशोदा उसे ढो नहीं पायी। नीचे उतारते ही पता नहीं कहाँ से एक महान बवंडर सा आ गया और बालक के साथ आसमान में उड गया। बवंडर की धूलि के कण आंखो में पडने से गोप बालक डर के मारे आँखें मीचते हुए अवाक खडे रहे। यशोदा बिलख बिलख कर रो रही थी।

भगवान को कोसने लगी कि मेरे बेटे के पीछे ही क्यों इतने ग्रह पडे हैं? आखिर उस मासूम बच्चे ने किया ही क्या है? अभी तक गोद में बैठकर दूध पी ही रहा था ऐसे गोद से उतरा ही नहीं, पता नहीं कहाँ से यह बवंडर टूट पडा और बच्चे को ले उड गया?'' अपने बछडे को खोयी गोमाता की तरह यशोदा मूर्छित हो गयी। गोप वनिताएँ भी शोकाकुल हो गयीं।

तृणावर्त का संहार

आसमान में बवंडर के रूप में आया हुआ दानव, बालकृष्ण को ढो नहीं पा रहा था क्योकि क्रमशः बालक का भार अधिक होता जा रहा था। इतने में बालक दानव के कंठ को जोर से कसकर, दबोचकर, जमीन पर उतरने लगा। जाल में फँसी पंछी की तरह दानव जमीन पर आ गिरा और दूसरे ही क्षण, पत्थरों पर गिरकर प्राण खो दिया। दानव के सीने पर बैठकर खेल रहे नन्हे कन्हैया को देखकर गोप कांताओं को सांत्वना मिली। यशोदा ने भी अपने बेटे को प्यार से पुचकाकर गोद में ले लिया। इस विपदा से बचाने के लिए भगवान को हजार बार कृतज्ञता प्रकट की। उधर बाल कृष्ण तो मस्त खेल रहा था।

यह तो अवतार पुरुष है

एक दिन यशोदा अपने बेटे से बडे ही लाड-प्यार से खेल रही थी। बालों को सँवार कर उसकी सुंदरता पर मुग्ध हो उसे चूम रही थी। कृष्ण ने तो दूध पीकर, जम्हाया। जैसे ही उसने मुँह खोला, उसमें समुंदर, भूमि, दिशायें, द्वीप, पर्वत, सूर्य चंद्रादि, तारालोक,

ग्रह, अखिल लोक, सारी प्रकृति को देखकर यशोदा के लिए आश्चर्य की सीमा न रही। तत्क्षण उसने निश्चय कर लिया कि यह मेरा बेटा अवतारपुरुष है।

क्रमशः बालक चलना सीख रहा है। यशोदा पूरी श्रद्धा के साथ उसकी रक्षा कर रही है। बडा भाई बलराम के साथ खेलते कूदते बाल कृष्ण को देखकर गोप वनिताएँ बहुत खुश हो रही हैं। दोनों माताएँ तो आग और पानी से बेटों को दूर रख, उनकी देख-भाल कर रहे है।

नटखट कृष्ण

एक दिन ऐसा हुआ कि यशोदा ने कृष्ण को खूब डाँटा और नटखटपन छोडने को कहा। वह भी माँ पर रुठकर एक कोने में चुपचाप जाकर बैठ गया। यशोदा से उसे इस तरह चुपचाप बैठा हुआ देखा न गया। उसे फिर से पास बुलाकर, चूमकर, लाड-प्यार कर मनाने लगी। कुछ देर तक, रूठने के इस नाटक को माँ के सामने प्रदर्शित कर, थोडी देर बाद कृष्ण, कटि-सूत्र की घंटियों की मृदु ध्वनि के साथ माँ के पास आया और दूध पीते हुए लाड-प्यार करने लगा। उसकी मैय्या अपने बेटे के प्यार में अपने आप को खो गयी। बेटा तो आस पास के घरों में जाकर बाँसी खाना खाकर आता था। फिर से घर में माँ के पास जाकर भूखे पेट का नाटक करता था। बिचारी यशोदा समझती थी कि बेटा सच ही में भूखा है। झट, खाना खिलाती थी। नन्हें कन्हैया को लाड-प्यार से नहा धुलाकर उसके पसंद का खाना खिलाकर सुला देती थी। गोपकांताएँ तो यशोदा के पास जाकर कृष्ण के नटखटपन के बारे में लाख बताने पर भी हँसी मजाक में टाल देती थी।

यह भी समझती थी कि सब गोपवनिताओं की शिकायतों का कारण मात्र ईर्ष्या है। मन ही मन सोचती थी कि इतना छोटा है मेरा बेटा इतना नटखटी कैसे हो सकता है? कृष्ण बिलकुल मासूम सा माँ को दिखायी देता था।

इतना लाड-प्यार क्यों?

श्रीकृष्ण बालक की तरह अभिनय करते हुए गोपवनिताओं को बहुत चिढ़ाता था। चोरी चोरी घरों में घुसकर झगडे मोल लेता था। उससे निपटना बहुत मुश्किल होने के कारण, एक दिन गोकुल की सभी गोपवनिताएँ एक जुट होकर यशोदा के पास आ गई। घर के काम काज में झुलस रही यशोदा, कृष्ण कन्हैया के बारे में भूल गयी। उसने सोचा कि वह कहीं गोप-बालकों के साथ खेल रहा है। लेकिन कृष्ण ने तो गोपिकाओं के घरों में घुसकर इतनी शरारत की कि उसे किसी को बताया भी नहीं जा सकता था। कई बार उन सबों ने उसकी सभी चेष्टाओं को 'बच्चों का खेल' ही समझकर बडी देर तक सहन किया। अब तो उसकी इन बाल्य चेष्टाओं का कोई अंत न होते देख उन सब ने निर्णय लिया कि सीधे यशोदा के ही पास जाकर पूछे कि अपने बेटे से चाहें जितना ही लाड प्यार करें लेकिन दूसरो के घरों पर शरारत करने न छोडें।

बछडों को छोड दिया

एक एक करके भी गोपकांताएँ यशोदा के सामने अपनी राम कहानी सुनाने लगीं। ''जसोदा मैय्या! तुम्हारे बेटे की करतूत सुनो। हमें दुख है कि दूध की कमी के कारण बच्चों के पेट भर दूध पिला

नहीं पा रही हैं। तिस पर तुम्हारा बेटा आकर बछडों को रस्सियों से छुडाकर, उन्हें गायों के पास छोड दे रहा है। बछडे तो दूध पेट भर पी रहे हैं लेकिन हमारे बच्चे तो भूखे रह जा रहे हैं। क्या करें?'' मुँह लटकाकर एक गोप वनिता ने बताया।

आपके धैर्य की प्रशंसा करनी है!

एक और बूढी औरत यशोदा के पास आ गयी- ''कृष्ण की शरारत के बारे में क्या कहें? पता नहीं कहाँ से टूट पडा अपने झुंड के साथ! घडों में से दूध निकालकर अपने साथियों को पिला दिया। बचे हुए दूध को तो जमीन पे ढकेल दिया। घडों को तोड दिया। अब तुम्ही बताओ कि ये बाल्य चेष्टाएँ ही हैं क्या? मुझे तो लग रहा है कि तुम अपने इस बच्चे को तो डाँट ही नहीं सकती हो। इसीलिए उसे तो किसी का डर है ही नहीं। उसे तो गाँववालों पर छोडकर आराम से रहनेवाली तुम माँ के धैर्य को सराहना ही चाहिए।

दूध तो जमीन को समर्पित

यशोदा निरुत्तर खडी है। इतने में एक और गोपकांता ने कहा- ''देखो यशोदा! हमने अब तक इतना नटखट लडके को न देखा और आन सुना। हमारे घर में वह दूध के लिए घुसा। दूध न पाकर, हमारे ही बच्चों को खूब मार कर चंपत हो गया। उसकी यह हिम्मत? आज, अभी हमारे घर में चोरी चोरी आया। छींके पर दूध मलाई को देखा। हाथ न लगने से ओखली पीढा आदि जमाकर उन पर चढ़ गया। फिर भी कुछ भी फायदा न होने से घडे में छेद कर दूध और मलाई पी लिया और भाग निकला। उसकी यह मजाल!

झगडा करवाया दोनों से

झुंड में से एक और वनिता ने कहा- ''खेल खेल में हमारे घर में आया। दही पूरा खतम कर दिया- अपने दोस्तों के साथ! जाते जाते, उस घर की बहू के मुँह पर दही मल दिया! सास ने बहू के मुँह पर दही के दाग देखकर उसे मारने गई कि बहू ने चोरी से दही को खा लिया है। इस तरह सास- बहू के बीच झगडा छेड दिया तुम्हारे लाडले बेटे ने! एक और घर में चला गया घी पीने के लिए। चोरी चोरी घडों को खाली कर, उन घडो को सामने वाले के घर में रख दिया। घरवाले, उनसे झगडा करने लगे कि आप चोरी से हमारे घडे ले गये। इस तरह आमने-सामने-वालों के बीच अशांति फैलना अच्छा है क्या?

मुझ से बडा भगवान कौन?

हमारे पूजामंदिर में आया और कहने लगा- ''मैं सबसे बडा भगवान हूँ। मुझ से बडा कोई नहीं है।'' कहते हुए, उन देवता-मूर्तियों पर अपनी लार लगा दिया। तुम ही कहो ये कहीं बच्चों की लीलायें हैं क्या? इतना ही नहीं हमारी खूब मजाक उढाकर, ठहाके मारकर हँस हँसकर भाग गया। इस तरह की शरारतों को देखें तो किसी को भी गुस्सा आ जायेगा न? फिर भी हम ने सोचा कि नंद-जसोदा किसी न किसी दिन अपने बेटे को डाँटेंगे। लेकिन हमारी आशाओं पर पानी फिर गया। दिन ब दिन तुम्हारे बेटे की शरारतें बढ़ती ही जा रही हैं।

तुम्हारा बेटा अल्हड भी है!

लडकपन ही समझ कर हम इतने दिन टाल रहे थे। लेकिन एक दिन ऐसा भी हुआ कि दूध मलाई खाते रहे कृष्ण को हमारी बहू

ने आकर कसकर पकड लिया। क्या तुझे मालुम है यह तेरे बेटे ने तब क्या किया? उसके पयोधर को पकडकर खरोचा! इसे हम लडकपन कहें या अल्हडपन? '' इतने में एक और गोप वनिता रोती हुई आयी। उसके होंठों पर दाँतों के निशान थे। दूसरी वनिता बताने लगी-'' देखा तू ने ये निशान? आँगन में खेल रहे कृष्ण को उठाकर इसने पूछा कि 'बेटा! तेरा नाम क्या है?' इतनी सी बात पर, तेरे बेटे ने इसकी यह हालत कर दी। अब सुनो उसने हमारे घर में घुसकर क्या किया? मेरे बेटी घर के पिछवाडे में नहा रही थी। पता नही यह तेरा बेटा, कहाँ से टपक पडा! कहने लगा कि उसका गेंद हमारे आँगन में आ पडा है। उसे ढूँढने का नाटक करते हुए, नहा रही मेरी बिटिया के वस्त्रों को चुरा ले गया।

ये सब बाल्य-क्रीडाएँ हैं क्या?

एक नौजवान लडकी को देखकर पता है उसने क्या कहा- ''मै तुम्हे ले भागूँगा। आती है क्या? ऐसी बातें हमने अभी तक सुनी ही नहीं कहीं। इससे भी बढ़कर और एक घटना सुनो। एक गृहिणी मन में कुढ़ती हुई बैठी थी कि उसे बेटे नही हैं। इतने में तेरा बेटा पता नहीं कहाँ से आ टपका और कहने लगा ''अगर मेरी पत्नी बनेगी तो तुम्हें बेटे होंगे जरूर!'' अब तुम्हीं बता ओ ये सब, बच्चे करते हैं क्या? दूर हट कर जाती कन्या से कहता है ''मुझ में क्या कमी है तनिक बताओ तो सही!'' किसी ने कहा कि मैं जच्चा हूँ तो झट उसने कहा कि मुझे बताओ तुझे माँ किसने बनाया है? इन सबसे बडा आश्चर्य की बात भी एक है। हमारे पति जब जब किसी काम

पर बाहर जाते हैं तो आकर हमसे दुर्व्यवहार करता है। फालतू बातें करता है। इस तरह की बातें कही भी हमने सुनी नहीं है। अब तो तूही सोच तुम्हारे इस लाडले का पक्ष ही लेती रहेगी या डाँटेगी। अभी भी मन में कुछ संदेह हो तो इन से पूछ लो।'' इस तरह बात करती हुई गोप वनिताएँ कृद्ध होकर चली गईं।

मेरा बेटा गिडगिडाया!

मेरा बेटा सो रहा था। मौका पाकर, तेरा बेटा आया, गाय के बछडे की पूँछ को और मेरे बेटे के बालों से बाँध डाला। मेरा बेटा गिडगिडाता हुआ रोने लगा तो तेरा यह बेटा खिलखिलाकर हँसने लगा। यह तो सही है कि कृष्ण नंद राजा का बेटा है। लेकिन इस तरह बेहद हो जाना क्या अच्छी बात है? इससे भी प्राणांतक काम भी बहुत सारे हैं तेरे बेटे के! तू कहीं यह मत समझना कि हम ईर्ष्या से यह सब तुझे बता रही हैं। देखो, एक दिन मेरा बेटा पेट भर दूध पीकर, सो रहा था कि तेरा बेटा कहीं से आया और उसके पेट पर मक्खन का घडा रख दिया। मेरा बेटा तो इतना गिडगिडाया कि क्या कहूँ? उसे ऐसे देखकर हमसे रहा नहीं जाता।

ऐसे कितने बतायें?

इतने में एक सुंदरी सामने आकर कहने लगी- ''क्यों जी! इससे बढकर आश्चर्य कहीं होगा क्या? जसोदा मैया! तेरे बेटे ने घर में सो रही एक गोपांगना की साडी उतारकर, बिछुए को छोडा। वह घबराकर उछल कूद करने लगी तो यह ठहाके मारकर हँसने लगा। मेरा बेटा अपनी घरवाली के साथ सो रहा था तो उन दोनों

के बीच साँप को ला छोड दिया। घबराकर दोनों कपडे उतारकर भागने लगे तो यह तेरा बेटा हँसने लगा। इसे क्या कहें तू ही बोल। एक और वनिता दही को मथती हुई, मक्खन निकालने के लिए नीचे झुकी ही थी कि तेरा बेटा उस पर लाँघकर जो किया, उसे बताने में शरम आती है। ऐसी कितनी और हरकतें बतायें तुझे बोल?

उन सबकी बातें तो यशोदा सुन ही रही थी लेकिन मन में कई विचार दौड रहे थे। नटखट कन्हैया को कैसे रोकें? इतनी सारी महिलाएँ एक जुट हो आकर बताती जायें तो विश्वास कैसे न करें? क्या जवाब दें? ये सब बाल सहज चेष्टायें तो कैसे हो सकती हैं भला? इतने ही में एक और महिला ने आकर कहा- ''जसोदा जी! तुम्हारे लाडले की बात क्या कहें? हम सबने सोचा कि तेरा बेटा आकर हमारा घर-बार लूट लेगा। इसीलिए हमने निर्णय ले लिया कि हमारे घर के दूध-दही मक्खन सब कुछ छिपाकर, ताला लगायेंगे और देखेंगे यह चोर आखिर कैसे अंदर घुसेगा? ताले तो जैसे के तैसे हैं लेकिन किसी के घर में से इसके गाने की आवाज आयी और किसी और के घर में से खेल और इसके खिलखिलाकर हँसने की! एक घर में से गालियाँ सुनायी दे रही हैं तो दूसरे घर में से दुलकारने की आवाज! जानवरों और पंछियों की आवाज निकाल रहा है! देखने गयीं तो इतने में गायब! घडे तो खाली पडे हैं।

मन अकुला गया

आपके पास धन-दौलत हो तो खुद खाइए और मजा लूटिये! लेकिन बेटे को इस तरह दूसरों के घरो पर छोडकर हम आम

जनता को डराते क्यों हैं? तेरे बेटे की शरारतों को हम अब कतई सहन नहीं कर सकती हैं। हमारे घरों में दूध, दही, मक्खन कुछ भी बचता ही नही है। हमारे गाय-बैलों के साथ हम कही दूर जाकर बस जायेंगे। तुम, तुम्हारे बेटे के साथ इस गोकुल पर राज करो।'' इस तरह गोप वनिताओं ने कृष्ण कन्हैया के नटखटपन का वर्णन किया। लेकिन वे नहीं जानती थी कि कृष्ण कि ये चेष्टायें ही उनके लिए वरदान हैं।

गोपांगनाओं की बातों को सुनकर, यशोदा तो दंग रह गई। इन्हे किसी तरह समझा बुझाकर वापस भेजना ही पडेगा। वरना, यह समाचार कई रूपों में फैल जायेगा और यादवों में अपने परिवार का अपयश होगा। उसे समझ में नही आया कि छोटे बच्चे की शरारत को देखकर खुश हो जाने के बजाय उसकी निंदा की जा रही है। उन्हें किसी तरह जवाब देना ही होगा।

अब तो शिकायत करना छोड दो!

''देखो बहन! आप सब की बातों को सुनकर मुझे अचरज हो रहा है। मेरे सीने से हमेशा चिपककर रहते हुए दूध पीनेवाले मेरे लाडले बेटे के बारे में आप सब अपनी शिकायतें मुझे सुना रही हैं। अभी तक वह ठीक से आँखें खोल नहीं पाता है। अपने आप से खेलते गाते मासूम बच्चे पर इस तरह आरोप करना छोड दो।'' यशोदा की आँखें भर गयीं।

किसी तरह निपटना चाहिए

यशोदा की मासूमियत को देखकर गोपांगनाएँ आश्चर्य चकित हो गयीं। उन्हें समझ में आ गया कि अपने लाडले बेटे की चेष्टाओं

के बारे में अनजान है यह! इसीलिए अपने बेटे की तरफदारी कर रही है। माँ के पास दूध पीते हुए ही, दूसरे घर की बहुओं से दुर्व्यवहार कर सकने की कृष्ण की चतुराई के बारे में इसे मालुम ही नही है। वह तो, दरवाजे खोले विना ही, दूसरों के घरों में घुस सकता है। तरह तरह के माया-विनोद करनेवाले इस कृष्ण की शरारतों को सहन करना ही चाहिए।'' गोपांगनाएँ इस तरह आपस में बात-चीत करती वापस अपने घर लौट गयीं।

उधर यशोदा के आवेग का अंत नही रहा। अपने नन्हें बेटे पर इस तरह आरोप करते देख, उसके दिल को ठेस लगी। अपने मासूम बेटे की तरफ क्रोध भरी आँखों से देखने के लिए भी उसका मन तैयार नहीं था। इसीलिए वह मौन रह गयी।

मन कैसे करता है?

बाल कृष्ण तो उन सभी की बातें सुनते हुए भी वहीं खेलता हुआ, मासूम सा स्वांग रच रहा है। माँ की डाँट खाने का भय दिखा रहा है। साधु की तरह इधर उधर घूम रहा है। माँ के वक्षःस्थल पर सर झुकाकर मासूम सा व्यक्हार कर रहा है। कह रहा है कि मैं कुछ नहीं जानता हूँ। ऐसे बच्चे को दण्ड देना यशोदा को बिलकुल न भाया।

माटी खाने के लिए मैं क्या छोटा बच्चा हूँ?

बालकृष्ण का नटखटपन अभी भी जारी है। एक दिन बलराम के साथ, कृष्ण गोकुल के ग्वालों के झुंड में खेल रहा है। खेल खेल में कृष्ण को मिट्टी खाते हुए उन्होंने देखा और झट यशोदा से

शिकायत की। बडे भैय्या बलराम की बातों पर विश्वास कर, यशोदा ने कृष्ण को डाँटा- ''देखो कन्हैया। तू इतनी बद्माशी कहाँ से सीख रहा है। मेरा कहना मानता ही नहीं। तेरे भैया और दोस्त सभी ने देखा कि तू मिट्टी खा रहा है। खाने के लिए कोई और पदार्थ ही नहीं है क्या? किस चीज की कमी है घर में बताओ तो सही?''

यशोदा की इन बातों का समाधान कृष्ण ने इस तरह दिया- ''देखो माँ! मिट्टी खाने के लिए मैं क्या छोटा बच्चा हूँ या पागल हूँ? इनकी बातों पर विश्वास मत कर। ये सब चाहते है कि तू मुझे मारे। पीटे! बस! इसीलिए ये सब मुझ पर शिकायत कर रहे हैं। अगर तुझे मेरी बातों पर विश्वास नहिं है तो देख, मेरा मुँह सूँघ! मेरी बातें झूटी निकलीं तो मुझे दण्ड दें!

यह सपना है या माया?

बातों बातों में ही, कृष्ण ने मुँह खोला। साक्षात् भगवान विष्णु के ही अवतार उस बालक के मुँह में पूरे ब्रह्माण्ड को यशोदा ने देखा। समुद्र, पर्वत, जंगल, भूगोल, अग्नि, सूर्य चंद्रादि ग्रह, दिक्पालकादि सहित ब्रह्माण्ड को अपने लाडले के मुँह में देखकर यशोदा आश्चर्य चकित हो गई। उसे समझ में नहीं आया आखिर यह सपना है या भगवान विष्णु की माया? ''मैं सच ही में यशोदा हूँ कि नहीं! यह गोकुल ही है या कुछ और जगह?'' इसी भ्रांति में यशोदा बहुत देर तक रह गई।

यशोदा-अचंभे में

आखिर इसकी उम्र क्या है? इसके मुँह में सारा संसार दिखाई देने का कारण क्या हो सकता है? यह तो किसी देवता की माया

दिखाई पडती है। लीला-विनोद में रुचि रखनेवाले विष्णु भगवान ने ही बालक के रूप में यहाँ जन्म लिया है। सारे संसार को ही अपने अंदर छिपा रखने की क्षमता और किसी भी देवता में नहीं है। जिस महानुभाव की दया से इस सारे जगत का निर्माण हुआ है, वही महानुभाव, हमारी सारी मुसीबतों को दूर करेंगे। अपने पति देव, गाय बैल और गोप बालक सभी को इस बालक के मुँह में देखना अचरज की बात है। यह तो साक्षात् जगदीश्वर हैं। हमारे रक्षक हैं।'' यह सब सोचते हुए, यशोदा शिला सदृश रह गयी।'' सर्वात्मा परमात्मा को अपनी गोद में रखकर, मातृत्व का अनुभव मैं ने पाया। साक्षात् परमात्मा को ही दूध पिलाने का भाग्य मुझे मिला। मेरी मन्नत पूरी हुई है।'' इसी भाव-जाल में वह रह गयी। भगवान को ही पालने पोसने का, यशोदा का भाग्य, पुराकृत पुण्यों का फल ही है।

दूध के लिए जिद

एक दिन कृष्ण खेलने के लिए बाहर गया था। यशोदा ने सोचा ''यही अच्छा समय है दही को मथने का!'' जैसे ही इस काम में यशोदा लग्न हो गयी, उसका सुंदर मुखडा, पसीने की छीटों से भर गया और बर्फ की बूँदों से ढका हुआ कमल सा दिखाई देने लगा। कमर मंथन क्रिया में लय के अनुसार झूम रही है। हाथों में पहनी हुई चूडियों से मथुर आवाज निकल रही है। केश पाश ढीला हो गया है। कर्ण-फूलो की कांति अवर्णनीय है। इसी बीच कहीं से कृष्ण वापस आ गया और माँ से दूध पीने के लिए जिद करना शुरु किया। घडे के पास मथानी को पकडकर खडा हो गया।

आँखो में आँसू भर आये

मथानी से खेलते हुए बेटे को प्यार से चूमते हुए, यशोदा ने गोद में ले दूध पिलाने लगी। कृष्ण के बालों को सँवारने लगी। इतने में यशोदा को याद आया कि दूध अंगीठी पर उबल रहा है। झट कृष्ण को नीचे उतारकर दूध को अंगीठी से उतारने जल्दी चली गई। कृष्ण रूठ गया कि माँ दूध पिलाते पिलाते बीच ही में छोडकर चली गई है। गुस्से में आकर उसने सामने रखे दही के घडे को तोड दिया। इतने में मक्खन दिखाई दिया तो उसे खाने लगा। फिर भी कन्हैया मन ही मन, माँ यशोदा के प्रति असंतुष्ट ही था। रोते रोते वहाँ से बाहर चल पडा।

इसे दण्ड देना ही है!

दूध को अंगीठी से नीचे रख आयी हुई यशोदा ने देखा कि दही का घडा टूट गया है। मन ही मन, वह हँसने लगी। कृष्ण के लिए उसने खूब ढूँढ़ा लेकिन उसे घर में न पाकर हैरान हो गयी। इतने में कृष्ण सामनेवाले घर में घुस कर छींके पर रखे दूध दही को देखा और ऊपर तक पहूँचने के लिए ओखले को खींच लाया। उसपर खडा हुआ। घडे पर हाथ लगाकर अपनी ओर खींचा कि घडा नीचे गिरकर दूध दही जमीन पर गिर गये। कृष्ण के मुँह पर हँसी छा गयी। यशोदा ठीक उसी समय वहाँ पर आ गयी। उसे अपने लाडले पर गुस्सा आ गया और सामने दीवार पर लटकते हुए चाबुक लेकर पीछे पडी। ''कन्हैया, तुझे इतने सारे दिन रंगे हाथ न पकड पायी। इसीलिए तू भी खुश है। लाचार गोकुलवासी

कोई तुझे डाँट नही सके। तुझे किसी का परवाह ही नहीं है। आज आखिर तुझे रंगे हाथ मैं ने पकड ही लिया न? तेरी शरारतों का इससे बढकर साक्षी और क्या चाहिए? आज मैं तुझे दण्ड देकर ही रहूँगी।'' यशोदा के मन में ये ही विचार चक्कर काट रहे हैं।

दण्ड देना ही सही है

खैर, छोटा बच्चा है, छोड देंगे। न..न.. यह तो छोटा बच्चा नहीं है। नादान नहीं है! बडों को भी मुश्किल लगनेवाले काम भी अनायास कर रहा है। ठीक है.. इस बार डरा-धमकाकर छोड दें? ना बाबा ना... हरगिज यह अपना बर्ताव बदलेगा ही नहीं! अगर, घर ही में कैद कर रखेंगे तो कैसा होगा? असंभव है। एक ही पल में वह चंपत हो जाता है आँखों में धूल झोंककर! किसी का भय नहीं है। इसी तरह हर किसी का मजाक उडाता हुआ फिरनेवाला, नटखट है यह! इसे किसी तरह सबक सिखानी ही है।'' उसने निर्णय लिया कि बचपन में ही इस तरह के नटखट बच्चों को दण्ड देना ही सही है।

माखन चोर पकडा गया

चाबूक दिखा दिखाकर, कृष्ण को यशोदा डाँट रही है। माँ को पास आते हुए देखकर, कृष्ण नीचे कूदा। पैरों में बाँधे नूपरों की मधुर ध्वनि के साथ इधर उधर दौडने लगा। हाथ नहीं आ रहा है। यशोदा भी हार न मानकर पीछे पीछे दौड रही है। आमने सामने की सभी गोपांगनाएँ वहाँ इकट्टी होकर माँ-बेटे की यह तमाशा देख, हँस रही हैं। यशोदा का शरीर पसीने से लथ-पथ हो गया है। कबरी तो

ढ़ीली हो गयी है। शरीर के सारे अंग थक गये हैं। फिर भी वह दौड रही है- कृष्ण को पकडने के लिए।

सामने खंभों के पीछे छिपकर कृष्ण, माँ से खेल रहा है। ''इस बार तो माफ कर दे माँ! आगे कभी मैं शरारत करता ही नहीं। यह मेरा वादा है।'' कहता हुआ वह रोने भी लगा। आँखों में लगा हुआ काजल तो मुँह में फैल गया। आँखों को मीचता हुआ भाग रहा है। आखिर वह पकडा ही गया। यशोदा चिल्ला चिल्ला कर सबको बताने लगी कि ''आखिर यह माखनचोर तो हाथ आ ही गया।'' लेकिन उसे मारने के लिए हाथ उठ ही नहीं रहे हैं। इसीलिए उसने सोचा कि इसे रस्सी से बाँध दें तो अच्छा होगा।

मेरी सारी कोशिशें नाकाम

छोटे कृष्ण को डाँटती हुई उसने कहा- ''अरे! ये महाशय कौन हैं आखिर? कह रहे हैं कि हमने कभी माखन खाया ही नहीं। चोरी क्या होती है, इन्हें मालुम ही नहीं है। इतने बुद्धिमान कोई होंगे आखिर इस दुनिया में। लेकिन आप के बारे में हमें मालुम है अच्छी तरह आपको बाँधना तो किसी के बस की बात नहीं है। हाँ मैं ने आज ठान ली कि आपको कैद करके ही रहूँगी और पकड ही लिया न? आप तो घूमते ही रहते हैं। एक जगह पर रुकते ही नहीं। एक नियम नहीं, किसी का डर नहीं। एक पल के लिए भी भूल जायें तो आप भाग निकलते हैं। पानी से डर नहीं है। आग से डर नहीं है। पहाड पर चढ़ना तो बहुत आसान काम है आप के लिए। बडे बडे खंभों को एक ही पल में तोड डालते हैं आप! आखेट पर जाते हैं

तो वहाँ भी अपनी मन-मानी! पानी के प्रवाहों पर बाँध डाल सकते हैं। मकर पर सिंह की तरह लाँघ सकते हैं। लेकिन ठीक से कपडे भी पहन नहीं सकते हैं। आप को, अपने काबू में लाने के लिए मैं ने जो कुछ किया-सब बेकार हो गया। आप जानते ही नही हैं कि आप क्या कर रहे हैं।'' यशोदा की इन सारी बातों को सुनता हुआ-नादान सा कृष्ण सामने खडा है।

भोली भाली यशोदा

यशोदा ने यह तय कर लिया कि यह तो बातों से सुधरनेवाला बालक नहीं है। झट उसने अपने लाडले बेटे को रस्सी से ओखली को बाँध ही दिया। माखन-चोर इस तरह पकडा ही गया। भगवान जो अपने भक्तों के अधीन में रहता है, आज इस तरह माखन चोर के रूप में, रस्सी से बँधा हुआ लीला वेष धारी बन खडा है। योगियों की कठोर तपस्या से भी बाँधे न जानेवाले भगवान, माँ के प्यार की रस्सी से बँध गया है। यशोदा समझ रही है कि कृष्ण तो साधारण बच्चा है। उसकी महिमाओं से, बिलकुल अपरिचित माँ है वह!

यह तो उसका स्वांग है

लक्ष्मी देवी के आलिंगन में भी नहीं बंधने वाले भगवान, सनकादि मुनियों के मन मंदिरों में भी अलभ्य देवता, आखिर, माँ के हाथों पकडा जाना तो आश्चर्य की बात है। कृष्ण को बाँध देने के लिए जो रस्सी यशोदा लायी थी, वह तो बार बार कम पड रहा है। कितनी ही बार कोशिश करने पर भी, कृष्ण की कमर को रस्सी से बाँधना, मुश्किल होता जा रहा है। यशोदा ने सोचा कि और एक

रस्सी के टुकडे को लाऊँगी। इस रस्सी को गाँठ से बाँधूँगी और कृष्ण को यहाँ से हिलने न दूँगी। यशोदा ऐसी कितनी ही रस्सियों को गाँठ डालकर बाँध रही है और फिर रस्सी कम पड रही है। कृष्ण की पेट तो जैसी की तैसी है। सामने खडी हुई गोप वनिताएँ तो आश्चर्य चकित हो गई हैं। यशोदा थकती जा रही है। पसीने से तर-बदर हो गई अपनी माँ को देखकर कृष्ण को उस पर तरस आ गई यशोदा का जूड़ा खुल गया है। फूल सब बिखरे पडे हैं। उसकी इस दीनावस्था देखकर कृष्ण ने निर्णय लिया कि अब तो बहुत हो गया! और आखिर, सकल लोकों के भक्त जनों को भव-बंधनों से मुक्ति दिलानेवाले भगवान स्वयं, बंधन में बंध गये।

गंधर्वों का शाप-विमोचन

भगवान विष्णु के मित्र ईश्वर, देवता, हृदयस्थित लक्ष्मी या आत्मज ब्रह्मा, इनमें से किसी ने भी यशोदा के जैसा आनंद कृष्ण से नहीं पाया है। ज्ञानी, मौनी, योगी, दास, इनमे से कोई भी श्रीकृष्ण को बाँध नहीं सके हैं। यशोदा का यह वृत्तांत यही सूचित करता है कि भगवान मात्र भक्ति से ही बंधे जाते हैं। कृष्ण कन्हैया को रस्सी से ओखली को बाँध देने के बाद यशोदा, घर के काम- में मग्न हो गयीं। कृष्ण, एक पल के लिए वही खडा रहा। थोडी देर बाद ऊखल को भी खींचता हुआ घुटनों के बल चला जा रहा है। उसके रस्ते में दो बडे बडे वृक्ष आ गये तो उन दोनों के बीच में से ऊखल के साथ चला। हुआ क्या? दोनों पेड उखडकर नीचे गिर पडे। उन में से दो शापित गंधर्व बाहर आ खेडे हो गये। वे दोनों कुबेर के पुत्र और

भगवान शंकर के दास थे। एक दिन ऐसा हुआ कि अपनी प्रेयसियों के साथ श्रृंगार में मग्न, उन दोनों ने नारद महर्षि के आगमन को न देखा। फलतः नारद ने उन्हें शाप दे दिया कि गोकुल में वृक्ष का जन्म लो। अब, नटखट कृष्ण के द्वारा उन्हें उस शाप से मुक्ति मिली है। गोप बालकों ने कृष्ण के, यशोदा के हाथों बंधे जाने का समाचार नंद को पहुँचाया। नंद आकर स्वयं गोकुल नंदन को रस्सी से छुडवाया।

श्रीकृष्ण मासूम सा अभिनय करने लगा। गोपांगनाएँ तालियाँ बजाती हुई गीत गा रही हैं। कृष्ण भी आनंदित हुआ सा, हाथ हिलाते हुए पुतली की तरह नाच रहा है। बाल बच्चों के साथ खेल रहा है। कूद रहा है। उन से हँसी मजाक कर रहा है। बडों की आज्ञा का पालन कर रहा है। आँख मिचौली खेल रहा है।

भिखारियों को दे दूँगी!

यशोदा कह रही थी कि दूध पीने से बाल बडे हो जायेंगे, ''कितना दूध पीने पर भी बाल छोटे ही हैं। क्यों?'' श्रीकृष्ण पूछ रहा था। यशोदा की आशा थी कि किसी बहाने से ही सही, कृष्ण को दूध पिलाना है। हाथ में कोडा पकडकर कन्हैया खडा है। सामने रखे हुए जल-कलश में अपने प्रतिबिंब को देखकर उसने समझा कि कोई डंडा लेकर मुझे मारने आया हुआ है। घबराकर रोता हुआ माँ यशोदा के आँचाल में छिप गया। यशोदा कहने लगी-अरे तुम यह क्या कर रहे हो। क्यों रो रहे हो भला? इसी तरह तुम रोते रहोगे तो तुम्हें भिखारियों को दे दूँगी! समझे? जब जब भिखारियों को देखता था, भय का अभिनय करता था।

वृन्दावन में नंद किशोर

श्रीकृष्ण इसी तरह अपनी बाल्य चेष्टाओं से माँ यशोदा का मन बहलाता रहा। एक बार बृहद् वन में नंद राजा ने कुछ उत्पातों को देखा था। उनसे बाल कृष्ण किसी तरह बच गया। अब उस जगह से अपने निवास को बदलना ही अच्छा समझा! यही बुजुर्ग उपनंद की भी सलाह थी। गोकुल वासियो ने निर्णय ले लिया कि वृन्दावन में बस जायें।

पुरोहितादियों की अगुआई में गोकुल की जनता चल पडी। रोहिणी यशोदा दोनों बलराम-कृष्ण के साथ एक ही बैल गाडी में बैठी हैं। दोनो भाइयों के खेल-कूद में पता नही, मार्ग कैसे कट गया। वृन्दावन में, खुशी के वातावरण में वास करने लगे। दोनों भाई अपने दोस्तों के साथ खूब आनंद उठा रहे थे। एक दूसरे से लडते हुए झगडते हुए, वहाँ के पेड-पहाडों में सहज घूमते हुए कृष्ण-बलराम को देखकर यशोदा की खुशी की सीमा न रही।

ब्रह्मा ने क्षमा माँगी

इसी बीच दस साल गुजर गये। कृष्ण तो अपने दोस्तों के साथ खेल-कूद में खूब आनंद लेता रहा। एक दिन वह अपने साथियों के साथ गाय चराने जंगलों में चला गया। उनके साथ खाना खाने बैठ गया। दोस्तों के साथ मिल-जुलकर खाने का आनंद ही कुछ और होता है। एक दूसरे के साथ व्यंजनों को बाँट लेना, अचार, मिठाईयों की स्वादिष्ठता की चर्चा करना, इसमें तो कृष्ण की उत्सुकता अधिक रहती है। ये सब साथी जब इस आनंद में मग्न थे,

ब्रह्मा ने वहाँ के गायों बछडों को अन्तर्धान कर दिया। इतना ही नहीं, कृष्ण और बलराम को छोडकर सभी बालको को भी गायब कर दिया। कृष्ण ने समझ लिया कि यह सब ब्रह्मा जी की करतूत है। झट उन सबों का वेष-धारणा स्वयं कर, उन सभियों के रूप में वृन्दावन चला गया। उन सभीयों के घरवालों को इस बात की भनक भी नहीं थी कि अपने बेटो एवं गायों का अपहरण हो गया है और कृष्ण ही अब इन सभीयों के रूप में घूम रहा है। देखते ही देखते, कई महीने हो गये। एक साल के पूरे होने के चार पाँच दिन पहले, बलराम और कृष्ण दोनों जंगल में गये जहाँ, बलराम को कृष्ण की महिमा के बारे में मालुम हो गया। इस बीच ब्रह्मा जी के लिए एक त्रुटि का समय हो गया और उन्होंने जब आँखें खोली तो सामने कृष्ण स्वयं अनेकानेक गोप बालकों के रूप में खडा है। अपनी दुष्ट बुद्धि पर ब्रह्मा जी खूब पछताकर कृष्ण के चरणों पर गिर गये। माफी माँगकर उन्होंने इतने दिन अपने पास छिपाकर रखे हुए गोवृन्दों और गोप बालकों को छोड दिया। नंद यशोदा दोनों समाचार सुनकर खुश हो गये। आश्चर्य चकित भी हो गये कि यह हमारा बेटा, सिर्फ हमारा ही नहीं बल्कि गोकुल के सभी बंधुजनों के गायों तथा लाडलों के रूप में इतने सारे दिन माया-मोहित किया।

मन्नतों का फल

गोविंद के साथ क्रीडाओं में गोपिकाओं को लगता था मानो उनकी सारी इच्छाओं की पूर्ति हो गई है। कृष्ण तो कुछ लोगों से शरमा जाता था। कुछ लोगों से हँस हँस कर बात करता था। कुछ

लोगों से विनयपूर्वक व्यवहार करता था। कृष्ण की इन चेष्टाओं से वे सब आकृष्ट होती थीं। रोहिणी और यशोदा दोनों, बलराम और कृष्ण पर नजर रखकर उनकी मन पसंद चीजों को खिलाती हुई, आनंद पाती थीं। दोनों भाई भी उन दोनों के आज्ञाकारी होते हुए, माताओं के इच्छानुसार वस्त्र धारण, कुसुमालंकार, रुच्य पदार्थों का सेवन, मृदुशय्याओं पर निद्रा आदि करते थे। उन की हर क्रिया, माताओं के लिए ही नहीं सारे गोकुल के लिए आनंद दायक थी।

कालिय नाग पर नृत्य क्रीडा

एक दिन श्रीकृष्ण अपने साथियों के साथ वन में गया। धूप चढने तक खेलते रहे। पानी पीने के लिए सब लोग सामने के कालिंदी सरोवर में उतरे। उसके विष पूरित जल को पीकर सभी गाय और गोपालक बेहोश हो गये। कृष्ण ने तो पहले ही से कालिय नाग के बारे में बहुत कुछ सुना था और आज उसने निर्णय ले लिया कि इस कालिय का अंत कर देना ही चाहिए।

झट कृष्ण उस तालाब में कूद पडा। इसे सुनकर कालिय भी नाराज होकर बाहर निकला और एक छोटे बालक को देखकर आश्चर्य चकित हो गया। इतने में फिर वह अहंकार पूरित हो सोचने लगा- ''मेरे इस सरोवर में वास करते रहने का विषय जानते हुए भी इस बालक का इतना साहस?'' विष पूरित वायुओं से हवा को दूषित कर दिया। अपने विष दंतों तथा पूँछ से बालक को कसकर बाँध दिया। कृष्ण भी कुछ देर के लिए शिला सदृश रह गया। ग्वाल सब, कृष्ण को इस तरह देखकर घबरा गये। जोरों से चिल्लाने लगे। उन्होने सोचा कि बस, इस बडे साँप की दंष्ट्राओं में फँसकर

कृष्ण के प्राण पखेरु उड जायेंगे। उन्हें समझ में नही आया कि इस विपदा से आखिर हमें कौन बचा पायेगा? नंद यशोदा भी निरुत्तर हो गये। बलराम तो कृष्ण की लीलाओं को अच्छी तरह जानता है। इसीलिए उसमे तो कोई घबराहट ही नहीं थी।

गोपवनिताएँ यशोदा से लिपटकर रो रही थीं। कन्हैया की लीलाओं का अनेक प्रकार वर्णन करने लगीं। ''हर दिन हमें दिखाई देता है। अपनी चेष्टाओं से मन बहलाता है। आज देखो-साँप ने उसे डस लिया। हमारे देवता की रक्षा अब कौन करेगा?'' यही है उनकी वेदना। नंद यशोदा का दुख भी यही है- ओ मेरे लाल! हमारे अनेकानेक मन्नतों का फल है तू। तेरी लीलाओं को देखते हुए हम कितने खुश रहे अब तक? उस दिन तू ने पूतना का विष भरा दूध पिया लेकिन तुझे कुछ नही हुआ! लेकिन आज इस साँप का विष क्या तुझे जीवित छोडेगा? पता नही, साँप के इसने क्षणों में तू ने कैसे चिल्लाया होगा?

तुझे छोडकर हम कैसे जियें?

सभी को छोडकर उस साँप ने तुझे ही क्यों डसा है? हममें किसी को भी डसने पर हम सबकी रक्षा तू ही कर सकता था लेकिन तेरी रक्षा करना हमारे बस की बात नही है। माँ - - पिताजी कहकर हमे प्यार से पुकारने वाले तुम आज क्यों जवाब नहीं दे रहे हो बोलो? तेरे दोस्तों से हँसी मजाक खूब करते हो न हमेशा! आज क्यो चुपचाप हो? खन खन पायलों की ध्वनि के साथ नाचनेवाले हो तुम? आज तुझे क्या हो गया है? तेरे मीठे मीठे वे बोल तो सुनाई

नहीं दे रहे हैं! तेरी खूबसूरत हँसी देखकर हमारी आँखें कृतार्थ होती थीं। आज वह कहाँ चली गयी? तेरे साथ गीत गा गाकर हमारी जिह्वायें भी गौरवान्वित होती थीं। हमारा वह सारा सौभाग्य, आज इस साँप के कारण लुट गया! इसे दुर्भाग्य के सिवा क्या कहें? तेरे बिना हमारा संसार सूना हो गया! हमारा जीवित रहना तो अब असंभव है। नंद यशोदा के दुख की सीमा ही न रही। गोकुल वासियों ने निर्णय ले लिया कि कृष्ण के बिना वे जीवित नहीं रह सकते है। उन्होंने सोचा कि जलाशय में कूद कर प्राण त्याग दें। लेकिन बलराम उन सब में ढाढ़स बाँधने लगा। ''आप जानते ही नहीं कि भविष्य में क्या होने वाला है। धीरज धरो। मर जाने से कुछ नहीं होगा। धैर्य धरो''।

अपने परिवार के जन तथा दोस्तों के दुख को देखकर कृष्ण ने भी कुछ देर के लिए साधारण मानव की तरह अभिनय किया। इतने ही में उन सब को दुख से विमुक्त करने तथा अपने प्यारे माँ-बाप नंद यशोदा को खुश करने के लिए अपने शरीर के आकार को इतना बढ़ाया कि उसे देखकर कालिय भी घबरा गया। बारंबार कृष्ण को डसने लगा। आहें भरता हुआ सर हिलाने लगा। चारों ओर देखते हुए अचंभा रह गया। कृष्ण भी उसकी इस दशा का मौका उठाकर, कालिय नाग को जोर से लात मारा और उसकी पूँछ पकडकर गोल गोल फिराया और उसके सर पर जा खडा हो गया। इस तरह उस साँप का अहंकार मिट गया और कृष्ण के वश में आ गया। यशोदा तथा अन्य गोपवनितायें सब आश्चर्य चकित हो, उछलने लगे, कूदने लगे। उस तरफ विजेता कृष्ण, कालिय के फण पर खडे होकर नृत्य करने लगा।

आनंद तांडव

यमुना नदी की कल कल ध्वनि मृदंग के नाद की तरह और वृन्दावन में झुंडों में फिर रहे भ्रमरों की झंकार-ध्वनि, गायकों के सुमधुर नाद की तरह सुनायी देने लगी। हंसों के नाद में तो लय-ताल की संगति ध्वनित हुई।

देव लोक से इस घटना को देख रहे गंधर्व, सभासद हो गये और कालीय का फण तो मणि-मंडप ही बन गया। अब कृष्ण स्वयं नाट्य-कलाकार है। आनंद तांडव करता हुआ गीत गा रहा है। इस दृश्य को देख रहे देवलोक वासी सब, फूलों की वर्षा करने लगे। कालिय की पूरी शक्ति अब मिट गई है। उसने अपने सैकडों सरों को कृष्ण के चरण-तल पर झुकाकर रक्षा करने की प्रार्थना की। ''अपने विष-पूरित फुँकार से सारे देवता भी भयकंपित हो भाग जाते हैं। लेकिन इस बालक ने तो मुझे ही डरा दिया। यह तो साक्षात् सर्वेश्वर ही है। और कोई नहीं।'' यही है अब उसका विचार!

पाहि माम्

नाग कांताएँ बाँबी से रोतीं बिलखतीं बाहर आ गईं और कृष्ण के चरणों पर गिर पडीं। समवेत स्वरों में उन्होंने कृष्ण से प्रार्थना की कि हे देव! हमें हमारा पति लौटा दो। पाहि माम्! पाहि माम्। तुम तो अवतार-पुरुष हो! दुष्टों का दमन करना तो तुम्हारा लक्ष्य है। इस क्रूर नाग के अहंकार का हरण भी इसी कारण हुआ है। लेकिन शत्रुओं को भी क्षमा करने में ही तुम्हारी चतुराई है हे देव। आखिर वह हमारा पति है। कृपया उसे हमें वापस दे दो। उसका भाग्य

अच्छा है क्योंकि उसके फण, तुम्हारे पावन चरणों के तांडव का नाट्य-रंग बने हैं जो महान योगियों के लिए भी अप्राप्य है। तुम्हारे चरणों की धूलि मात्र से, उस दिन पत्थर ने नारी का रूप धारण किया है। देखो आज यह कालिय का भी महद्भाग्य यही है कि वह तुम्हारे पावन चरणों के स्पर्श का योग्य बन गया है। उसके इसी भाग्य को दृष्टि में रखकर हमें, अपने पति को लौटा दो।''

नाग-पत्नियों की प्रार्थना से करुणासिंधु कृष्ण ने, कालीय को छोड देने का निश्चय किया लेकिन कहा कि इस प्रांत को छोडकर दूर कही चला जा! पछतावे से यह नाग भी सर झुकाकर अपनी पत्नियों के साथ दूर चला गया। मूर्छित नंद यशोदा और गोप बालक सभी होश में आ गये और आनंद-विभारे हो गये। बलराम ने छोटे भाई को गले लगाया।

कन्हैया की लीला

इस आनंद-वेला मे गाय-बैल सब जोर से रंभाने लग गये। बछडें खुशी खुशी इधर-उधर दौडने लगे। गोकुलवासी सभी यशोदा की तारीफ करने लगे। ''तेरे बेटे ने तो साँप को भी हरा दिया। कितनी भगवान है तू।'' आँसू भरी आँखों से यशोदा, कृष्ण को अपनी गोद में लेकर बार बार चूमने लगी। ''मेरे लाल! उस डरावने साँप की पकड में पता नही तू ने कैसे चिल्लाया? उसका सामना कैसे किया?'' कहती हुई पुचकारने लगी। विपदा से बच जाने से उसके आनंद की सीमा न रही। कृष्ण के अद्भुत पराक्रम का बार बार स्मरण कर आश्चर्य-चकित होने लगी। अपने साहसी

लाडले की थकावट के बारे में चिंतित होने लगी। उसकी इस स्थिति को देख गोप वनिताएँ भी उसे सांत्वना देने लगीं।

झट निगल डाला

परमानंद में मग्न गोप कांताएँ कालिंदी के किनारे विश्राम कर रहीं थीं। इतने में जंगल मे दावानल फैल गया। बीच रात, सो रहे सब गोकुलवासी घबराकर जाग गये और उन सब के रक्षक कृष्ण के शरण में चले गये। एक जुट होकर कृष्ण का गुण-गान गाने लगे। झट कृष्ण ने उस दावानल को निगल डाला! इस तरह गोकुल में बालक, वन, यशोदा-नंद दंपति को, बलराम-कृष्ण ने आनंदित किया।

एक दिन, नंद अपने ग्रामवासियों के साथ कृष्ण के सामने प्रस्ताव रखा कि इंद्र-याग किया जाय, क्योंकि खूब वर्षा के लिए, इन्द्र को प्रसन्न कर लेना आवश्यक है। कृष्ण को तो यह, प्रस्ताव अनुचित लगा। उसने सलाह दी कि इंद्र के बजाय, पर्वत-राजा को प्रसन्न करना उचित है। गोकुल वासियों को कृष्ण की बात अच्छी लगी और वे पर्वत-राजा के नाम-याग करने जुट गये।

छगुनिये पर गोवर्धन पर्वत

नंद-यशोदा दोनों याग की दीक्षा पर बैठे। याग तो जोरों पर चल रहा है। इन्द्र तो नाराज हो गया। पुष्कलावर्त बादलों को बुलाकर, उस याग में बाधा डालने को कहा। फलतः शिलाओं की वर्षा होने लगी। सभी लोग भय से काँप रहे थे। कृष्ण की प्रार्थना करने लगे कि हमारी रक्षा कर! बालकृष्ण ने अपनी छोटी उँगली

पर गोवर्धन-पर्वत को उठाया और सभी गोकुल वासी उस पर्वत की छाया में आ गये। ऐसा लगा कि कृष्ण पर्वत को नही, एक पुष्प-गुच्छ को छगुनिये पर, छाते की तरह उठाकर खडा है। नंद यशोदा उसकी तरफ एकटक देखते खडे थे। यशोदा के मन में भय की रेखा फैल गयी। लेकिन कृष्ण कह रहा था कि हे गोकुल वासियों! आप घबराइये मत! एक बालक का इस तरह पर्वत को उठाकर खडा रहना क्या सच ही है? यही सोचते हुए आश्चर्य चकित मत होना! समस्त धरा-चक्र मुझ पर गिर पडने से भी मुझे कुछ नही होगा। इसी तरह ऊँगली पर खडा कर दूँगा उसे भी! आ जाओ आप सब।''

पूरे सात दिनों तक कृष्ण उस पर्वत को अपनी छोटी उँगली पर धरकर खडा रहा। गोकुल वासियों की रक्षा की। कृष्ण की इस धीरता के सामने अपनी शक्ति को निष्फल मानकर, इन्द्र ने भी हार माना और अपने बादलों के साथ वापस लौट गया। बालकृष्ण ने पर्वत को यथास्थान रख दिया। इस साहस-कार्य के लिए कृष्ण को सभी गोकुल वासियों की बधाइयाँ मिलीं।

नंद और बलराम-दोनों ने कृष्ण को गले लगाया। यशोदा कृष्ण से लिपटकर रोने लगी। पूरे शरीर का स्पर्श कर देखने लगी कहीं चोट तो नहीं लगी। उसके मन में एक यही शंका थी कि उतने बडे पर्वत को, अपनी छोटी उँगली पर, इस छोटे बालक ने कैसे उठाया होगा? उसके हाथ को कितना दुख पहुँचा होगा?'' दीठ उतारकर उसे सीने से लगने के बाद ही यशोदा को सांत्वना मिली। देवताओं ने पुष्पों की वर्षा की।

उसका जन्म धन्य है!

एक बार नंद एकादशी-व्रत में उपवास दीक्षा पर था कि इन्द्र का वरुण-दूत उसे वरुण नगर ले भागा। श्रीकृष्ण खुद वरुण नगर चला गया और नंद को वापस ले आया। यशोदादि गोकुल वासियों ने जान लिया कि श्रीकृष्ण भगवान विष्णु का अवतार ही है। कुछ दिनों के बाद कृष्ण के मथुरानगर चले जाने तक यशोदा उसकी माँ के रूप में उसका पालन-पोषण करती रही।

यशोदा एक भोली भाली माँ है। वह जानती ही नहीं कि उसका बेटा अवतार मूर्ति है। उसे अचरज होता था कि कृष्ण की बालक्रीडायें सिर्फ उसे ही नहीं बल्कि० सारे ग्राम वासियों को भी आनंदित कर रही हैं। इस तरह अनेकानेक महिमाओं को दिखानेवाले कृष्ण की माता बननेवाली यशोदा का जन्म धन्य है। उसे माँ के रूप में स्वीकार कर, उसके मातृत्व की महिमा के सामने बालक परमात्मा श्रीकृष्ण हम सब के आराध्य-देव हैं।

* * *